जे पिण्डे ते ब्रह्माण्डे

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जो पिण्ड में है वह ब्रह्माण्ड में भी है। पिण्ड शरीर को कहते हैं। ब्रह्माण्ड सृष्टि या संसार को कहते हैं। इसे लोक भी कहते हैं। लोक में प्राणी निवास करते हैं। लोक से परे अलोक है वहां प्राणी निवास नहीं कर सकते। वहां केवल स्पेश है। वहां आक्सीजन नहीं है। इसलिए वहां प्राणी नहीं रह सकते। ब्रह्माण्ड में चराचर जगत् समाया हुआ है। इसके अन्दर चौरासी लाख जीव योनियों के प्राणी और चार गतियों के जीव निवास करते हैं। सभी प्राणी अपने कर्मों के अनुसार सुख–दुःख की अनुभूति करते हैं। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीव इस ब्रह्माण्ड में निवास करते हैं। किसी भी जीव का अस्तित्व समाप्त नहीं होता केवल रूपान्तरण होता है। ब्रह्माण्ड में जड़ और चेतन दो प्रमुख तत्व हैं। जड़ में संवेदना नहीं होती यह नीर्जिव होता है। जड़ तत्व गलन मिलन धर्मा है। यह परिवर्तनशील है। चेतन तत्व अपरिवर्तित है। जड़ और चेतन के परमाणु शाश्वत है। परमाणु नष्ट नहीं होते हैं। परमाणु से बनी वस्तुएं कालचक्र के अनुसार नष्ट होती रहती हैं।

ब्रह्माण्ड पंचभूतात्मक है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पांच मूल तत्व हैं। सभी भौतिक वस्तुएं इन्हीं से बनी है। नष्ट होने के बाद पुनः इसी में विलीन हो जाती है। यहां असंख्य जीव निवास करते हैं। अध्यात्मवादी छः द्रव्यों को मानते हैं और भौतिकवादी पंचमहाभूतों को मानते हैं। छठा प्रमुख तत्व आत्मा है। आत्मा सच्चिदानन्द है। आत्मा से सभी तत्व संचालित होते हैं। जड़ से सुख–दुख की अनुभूति नहीं होती। चेतन और जड़ के संयोग से सृष्टि चलती है।

शरीर जड़ और चेतन का मिश्रण है। जड़ ओर चेतन दोनों विजातीय द्रव्य हैं। आत्मा चेतन और अरूप है। शरीर अचेतन और सरूप। दोनों का संबंध कैसे हो सकता है? संसारी आत्मा सूक्ष्म और स्थूल इन दो प्रकार के शरीरों से आवेष्टित रहता है। एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने के समय स्थूल शरीर छूट जाता है, सूक्ष्म शरीर नहीं छूटता। सूक्ष्म शरीर धारी जीवों को

एक के बाद दूसरे–तीसरे स्थूल शरीर का निर्माण करना पड़ता है। सूक्ष्म शरीर धारी जीव ही दूसरा शरीर धारण करते हैं। इसलिए अमूर्त्त जीव मूर्त्त शरीर में कैसे प्रवेश करते हैं यह प्रश्न ही नहीं उठता।

संसारी दशा में जीव कथंचित् मूर्त्त भी है। उसका अमूर्त्त रूप विदेह दशा में प्रगट होता है। संसारी दशा में जीव और पुद्गल का कथंचित् सादृश्य होता है। शरीर और चेतना दोनों भिन्न धर्मक है। फिर भी इनका अनादि संबंध है। चेतन और अचेतन चैतन्य की दृष्टि से भिन्न हैं। इसलिए वे एक नहीं हो सकते, किन्तु सामान्य गुण की दृष्टि से वह अभिन्न भी हैं। इसलिए उनमें संबंध हो सकता है। चेतन शरीर का निर्माता है। शरीर उसका अधिष्ठान है। इसलिए दोनों पर एक दूसरे की क्रिया–प्रतिक्रिया होती है। शरीर की रचना चेतन विकास के आधार पर होती है। चेतना विकास के अनुरूप शरीर की रचना होती है। शरीर रचना के अनुरूप चेतना की प्रवृत्ति होती है। शरीर निर्माण काल में आत्मा उसका निमित्त बनती है।

आत्मा शरीर से सर्वथा भिन्न नहीं होती इसलिए आत्मा की परिणति का शरीर पर और शरीर की परिणति का आत्मा पर पड़ता है। देहमुक्त होने के बाद आत्मा पर शरीर का कोई प्रभाव नहीं होता, किन्तु दैहिक स्थितियों में जकड़ी हुई आत्मा के क्रियाकलाप में शरीर सहायक और बाधक बनता है। जड़ पदार्थ में हलन–चलन नहीं होता। जैसे पत्थर लकड़ी या अन्य निर्जीव पदार्थ एक जगह रखे जाते हैं तो उसमें गति नहीं होती है। जड़ पदार्थ चेतन भाव से रहित होता है, इसलिए उसे जड़ कहा जाता है। वस्तु के हलन–चलन को गतिशीलता कहा जाता है।

आत्मा और जड़ का जब संयोग होता है तो जड़ पदार्थ भी आत्मवत् प्रतीत होने लगता है। शरीर जड़ है और आत्मा चेतन। शरीर से जब आत्मा का संयोग होता है तो जड़ शरीर भी आत्मवत् प्रतीत होने लगता है। शरीर से अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कार्य किये जाते हैं। मूलतः आत्मा के शुद्धि और अशुद्धि का कोई प्रश्न नहीं है। शरीर में शुद्धता और अशुद्धता देखी जाती है। यदि मानव अच्छा कर्म करता है तो पुण्यलोक की प्राप्ति होती है और यदि बुरा कार्य करता है तो उसे नरक की प्राप्ति होती है। इसी को ध्यान में रखकर यह बात कही गयी है कि धर्म आत्मा को शुद्ध करता है।

आत्मा को न तो आंखों से देखा जा सकता है, न वाणी से कहा जा सकता है, न तो अन्य इन्द्रियों से उसे जाना जा सकता है, न तपस्या और कर्म से ही उसे जाना जा सकता है। जिसके द्वारा सारी ज्ञानेन्द्रियां अपने–अपने विषय का ज्ञान कराती हैं उसे ज्ञान के द्वारा ही जाना जा सकता है। जप, तप निखिलकर्मानुष्ठान ये सारे साधन आत्मविषयक आचार में परिगणित हैं, किन्तु ये केवल चित्त शुद्धि तक ही सीमित हैं। शुद्ध चित्त में ज्ञान का प्राकट्य उसी प्रकार होता है जैसे स्वच्छ कांच में प्रतिबिम्बोपलब्धि होती है। जब मनुष्य को सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र का ज्ञान हो जाता है तो उसका ज्ञान पुष्ट हो जाता है। पुरुष या आत्मा को चेतन तत्त्व तथा प्रकृति को अचेतन या जड़तत्त्व कहा गया है। पिण्ड से ही ब्रह्माण्ड बना हुआ है।